रिकॉर्ड :– तकदीर जगाकर आई हूँ..... ॐ पिताश्री 16/6/64

ओम् शांति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं, जो यहाँ तकदीर बनाने आए हैं। क्यों, तकदीर को क्या हुआ है? तकदीर को लकीर लगी हुई है। भारत तकदीरवान था। भारतवासी देवी–देवताएँ थे। भारतवासी स्वर्ग के मालिक थे, तकदीर जगी हुई थी; अब भारतवासी नरक के मालिक हैं, तकदीर उझानी हुई है। यह कौन समझाते हैं? जो सबकी तकदीर बनाने वाला है, सबको दुःखों से छुड़ाने वाला, फिर सबको सुख देने वाला। यह है दुःखधाम। भारत 5000 वर्ष पहले सुखधाम था, सबकी तकदीर जगी हुई थी। अब तकदीर सोई हुई है। सारी मनुष्य सृष्टि की तकदीर जगाने वाला ज़रूर बेहद का बाप ही होगा। बाप रचयिता है ना! अब तुम जानते हो, भारत में सब मनुष्य सुखी थे। कौन–से मनुष्य? ऐसे नहीं कि सतयुग में 500 करोड़ मनुष्य थे। पहले–2 सतयुग में 9 लाख थी, देवी–देवता धर्म की शुरुआत थी। यह सब बातें समझाने वाला है ज्ञान का सागर, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप बाप। बच्चों से पूछेंगे, तुम्हारा बीज रचयिता कौन है? तो कहेंगे, मम्मा–बाबा ने हमको रचा; क्योंकि सब माँ–बाप से ही जन्म लेते हैं। बाप स्त्री को जन्म नहीं देता है, एडॉप्ट करते हैं– तुम मेरी स्त्री हो। फिर उनसे बच्चे पैदा करते हैं। वो है क्रियेटर, स्त्री को एडॉप्ट किया– तुम कन्या पराए घर की हो, हम तुमको अपनी पत्नी बनाते हैं। फिर दोनों से बच्चे पैदा होते हैं। बच्चे उनको मात–पिता कहते हैं। वो हैं हद के मात–पिता। हद के मात–पिता से इस समय सब दुःखी हैं। कितना रोना–पीटना, लड़ना–झगड़ना चलता है; इसलिए कहा जाता है– बिच्छू–टिंडन, दुख देने वाले। बाप कन्या की शादी कराते हैं। पहले कन्या पवित्र है तो कितना मान है, सब (नमन) करते हैं। कन्याओं का इतना मान क्यों? उनके भाई का मान क्यों नहीं है? गाया भी हुआ है– कन्या वो जो 21 कुल का उद्धार करे। अब बाप बैठ समझाते हैं, कुमारियों को नमन करते हैं; क्योंकि यह जो ब्रह्माकुमारियाँ हैं, ये इस समय भारतवासियों का 21 जन्मों लिए उद्धार करती हैं। ये सब कुमारियाँ हैं। शादी की हुई हैं कहते हैं हम ब्रह्माकुमारी–ब्रह्माकुमार हैं, तो बहन–भाई हो गए, काम–कटारी चला नहीं सकते। पवित्रता का मान तो है ना। सन्यासी पवित्र बनते हैं, उनका भी मान है। भारत में पवित्रता थी तो भारत सदा सुखी था, सम्पूर्ण निर्विकारी थे। बरोबर मंदिरों में जाकर गाते हैं– आप सर्वगुण सम्पन्न..... हैं। तुम्हारा वास्तव में हिन्दू धर्म नहीं है, हिन्दुस्तान तो रहने का स्थान है। यूरोप में रहने वालों का धर्म यूरोपियन थोड़े ही कहेंगे। धर्म तो क्रिश्चियन है ना! हिन्दुस्तान में रहने वालों का हिन्दू धर्म नहीं है, धर्म तो और होना चाहिए। बाप समझाते हैं, जो देवी–देवता धर्म वाले थे, वो ही अब अपन को हिन्दू कहलाते हैं; क्योंकि अपने धर्म को भूल गए हैं। हिन्दू कोई आदि सनातन धर्म नहीं है। क्रिश्चियन लोग क्राइस्ट को ही मानते हैं, पूजते हैं; क्योंकि उसने क्रिश्चियन धर्म स्थापन किया। यहाँ किसको भी यह पता नहीं है, हम किस धर्म के हैं। कोई सिक्ख धर्म वाला होगा, वो झट बतावेगा, मैं सिक्ख धर्म का हूँ। सिक्ख धर्म किसने स्थापन किया? कहेगा, गुरुनानक ने। उसने धर्म कैसे स्थापन किया, यह फिर तुम जानते हो। कोई भी पतित आत्मा धर्म स्थापन कर न सके। जो–2 धर्म स्थापक होते हैं वो पहले–2 पवित्र होते हैं, फिर अपवित्र शरीर में प्रवेश कर धर्म स्थापन करते हैं; जैसे गुरुनानक को तो बच्चे आदि थे, फिर उनसे प्योर आत्मा ने प्रवेश कर सिक्ख धर्म स्थापन किया। यह ब्रह्मा का भी पतित शरीर है, तो इनमें ज्ञान का सागर बाबा आए हैं। तुम जानते हो हमारा वो बाप है। यह आत्मा कहती है। अब आत्मा–अभिमानी बनना है। देह में आत्मा रहती है। कोई कहते हैं मैं क्लॉथ सर्वेन्ट हूँ। तो यह आत्मा ने इन ऑरगन्स द्वारा कहा। आत्मा कहती है मैंने 84 जन्म पूरा किया है। बाप बैठ समझाते हैं, मैं हूँ तुम आत्माओं का बाप। मेरा अवतरण भारत में ही होता है। मुझे अपना शरीर नहीं है। ब्र०वि०शं० का भी सूक्ष्म शरीर,

मेरा तो लिंग ही दिखाते हैं। मेरा कोई इतना बड़ा रूप नहीं है। मैं हूँ स्टार; जैसे आत्मा स्टार है। बाकी मैं कोई इतना बड़ा नहीं हूँ वा आत्मा कोई बड़ी नहीं होती। चमकता है भृकुटि के बीच अजब सितारा। आत्मा बहुत छोटी है। इसकी लाइट का साक्षात्कार अक्सर करके सफेद होता है। अब कितनी आत्माएँ हैं! 500 करोड़; क्योंकि अब तो कलियुग है। सतयुग में 500 करोड़ आत्माएँ शरीरधारी होंगी? नहीं। अगर सतयुग में इतनी होतीं तो अब तक अरब हो जाएँ। इतनी तो हैं नहीं। यह कोई साधु–संत नहीं, यह तो बाप है। उस बाप का कोई बाप नहीं है। ब्र०वि०शं० का भी बाप है। कृष्ण का बाप था। बेहद का बाप कहते हैं, मेरा कोई बाप नहीं। हमारा न बाप, न टीचर है। सतयुग में भी बच्चे राजविद्या पढ़ने स्कूल जावेंगे, टीचर होगा, हमारा कोई टीचर नहीं है। मैं तुमको राजयोग की शिक्षा देता हूँ। मैं कोई राजा–महाराजा नहीं बनूँगा, तुम बच्चे बनेंगे। पूज्य श्री ल०ना० थे, सतयुग में राज्य करते थे। यह निराकार बाप इस शरीर में विराजमान हो आत्माओं को बैठ पढ़ाते हैं, हम आत्माएँ पढ़ती हैं। वो है ज्ञान का सागर, शांति का सागर। बाप कहते हैं, मैं अपना वर्सा तुम बच्चों को देने आया हूँ 21 जन्मों लिए। सतयुग में तुम सुख–शांति वाले थे। रावण भूत वहाँ होता नहीं। वो है ही सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। अभी है सम्पूर्ण विकारी दुनिया।

अब तुम बच्चे जानते हो, हम बाबा से तकदीर बनाने आए हैं। स्कूल में तकदीर बनाई जाती है ना! पढ़कर पास करेंगे, टीचर बनेंगे। यहाँ तुम 21 जन्मों लिए तकदीर बनाते हो। वो तकदीर बनाते हैं इस एक जन्म के लिए, स्कूल में पढ़कर फिर कमाए शरीर निर्वाह करेंगे, अपना और दूसरों का। तो उन स्कूलों में एक जन्म की तकदीर बनाते, जन्म–जन्मांतर लिए तो कोई बैरिस्टर, इंजीनियर आदि नहीं बनेंगे। दूसरे जन्म में फिर पढ़ना पड़े। वो है शरीर निर्वाह अर्थ धंधा एक जन्म का। बाप तो कहते हैं, मैं तुमको 21 जन्मों लिए सुख–शांति का वर्सा देता हूँ। यह बेहद के बाप ने कहा। उनका कोई बाप नहीं है। तुम बच्चे कहते हो– बाबा, हम आपके हैं। बाबा भी कहते हैं– हाँ बच्चे, तुम हमारे कल्प पहले थे, अब फिर आए बने हो। यह है ईश्वर बाप से बच्चों का संबंध। आत्माएँ परमात्मा अलग रहे बहुकाल...। 5000 वर्ष पहले भी तुम बच्चों को गुलगुल बनाए हेल्थ और वेल्थ दी थी; क्योंकि ... नॉलेज है सोर्स ऑफ इनकम। पढ़ाई से ही तकदीर बनती है। वो होती है हद की, यह है बेहद की तकदीर। यह स्कूल है, सतसंग नहीं। सतसंग में तो जाते हैं, कोई ने रामायण ग्रंथ आदि सुनाया, बस। बाबा तो नॉलेजफुल है। बाबा कोई शास्त्र आदि नहीं पढ़ते हैं। कहते हैं, मैं तो सब कुछ जानता हूँ। यह सिर्फ तुम्हारी ही बुद्धि में है कि वो है मोस्ट बिलवेड बाप, जिसको सब याद करते हैं कि इस पतित दुनिया में आओ, आकर हमको सुख घनेरे दो। तुम मात–पिता, हम बालक तेरे, अब सन्मुख आए बनते हैं। बाप है विचित्र। उनका कोई चित्र (शरीर) नहीं है; परन्तु चित्र के आधार बिगर शिक्षा कैसे देवे! इसलिए कहते हैं, मैं इस शरीर का आधार ले, इन द्वारा तुमको बैठ पढ़ाता हूँ। तुम जानते हो, इसको कोई मनुष्य गुरू वा मनुष्य टीचर नहीं पढ़ाते हैं। लगा हुआ है भगवानुवाच। वो है निराकार। ब्रह्मा देवता नमः, विष्णु देवता नमः कहा जाता है। ब्रह्मा भगवान नहीं कहेंगे; क्योंकि वो है सूक्ष्मवतन वासी देवताएँ, रचना। उनसे कोई वर्सा नहीं मिल सकता, तो फिर मनुष्य, मनुष्य को कैसे वर्सा देंगे! नए–2 तो इन बातों को समझ नहीं सकें। यह है गॉड फादरली नॉलेज। भगवान पढ़ाते हैं– बच्चे, मैं तुमको मनुष्य से देवी–देवता बनाता हूँ। ऐसे और कोई कह न सके। सन्यासी आदि तो स्वर्ग के मालिक बन नहीं सकते। उनका है ही निवृत्तिमार्ग। सतयुग में तो प्रवृत्तिमार्ग में पवित्र देवी–देवताएँ थे। अब फिर मैं आया हूँ पतित से पावन बनाने। जितना याद करेंगे उतना विकर्म विनाश हो, पवित्र बनते जावेंगे। आत्मा ही पतित होती है। जैसे सोने में खाद पड़ती है फिर जेवर खाद वाला बनता है। आत्मा में भी खाद पड़ती है तो आइरन एज्ड बन ....हैं। अब सभी तमोप्रधान हैं, फिर तुम आत्माएँ सुन्दर बनेंगी तो शरीर भी सुंदर मिलेगा। सतयुग में तुम गोरे अथवा सुंदर थे, फिर 84 जन्म लेते–2 तुम श्याम अर्थात् साँवरे बने हो; इसलिए कृष्ण को

श्याम–सुन्दर कहते हैं। एक की तो बात नहीं, सारी राजधानी गोरी, सुन्दर थी। अब श्याम बन गए हो। आत्मा और शरीर दोनों रोगी बन गए हैं। तुम जानते हो, हम सो पूज्य देवी–देवता थे। माया ने पूज्य से पुजारी बनाया है। देवी–देवता धर्म वाले धर्म–कर्म भ्रष्ट हो गए हैं। देवताओं के आगे जाकर कहते हैं– हम नीच, पापी हैं, हमारे में कोई गुण नाहीं। हम कंगाल, दुखी हैं। भारत में देवी–देवताओं का राज्य था, तो भारत ..... था। अब तो प्रजा का राज्य है, बाप को जानते नहीं। यह तो जानते हैं, इस पुरानी दुनिया का विनाश होना है ज़रूर। गाया जाता है– विनाश काले विपरीत बुद्धि, किसकी? यादव और कौरव, जो अनेक धर्म वाले हैं। बाप को कोई भी नहीं जानते, विपरीत हैं। कहते हैं– सर्वव्यापी है, पत्थर–ठिक्कर सबमें है। यह तो गाली देते हैं। विपरीत बुद्धि हुई ना! एक तरफ कहते हैं वो जन्म–मरण रहित है और फिर कह देते परमात्मा सर्वव्यापी है, कुत्ते–बिल्ले, पत्थर–ठिक्कर सबमें है। मेरी कितनी ग्लानि करते हैं! मनुष्य की 84 लाख योनियाँ कहते, मेरी तो इनसे भी जास्ती पत्ते–2, पत्थर–ठिक्कर में ठोक, भारतवासियों ने खाना खराब कर दिया है। तो भारत का भी खाना खराब हो गया है। यह है नाटक। मैं यह जानता हूँ। मैं आकर फिर तुम्हारा खाना आबाद कराता हूँ, तो मेरी मत पर चलना पड़े। भगवानुवाच्य, तो तुम्हारी तकदीर जो डुबी हुई है, अच्छी बन जावेगी। तकदीर बनाने की यह पढ़ाई है। स्वर्ग का मालिक तो स्वर्ग की स्थापना करने वाला ही बनावेगा, सन्यासी थोड़े ही बना सकेंगे। स्वर्ग की स्थापना करने वाला है हैविनली गॉड फादर। वो नर्क की .... कर नहीं सकते। नरक वासी माया बनाती है। तुम गाते भी हो– दुख में सिमरण सब करे, सुख में करे न कोई। भक्ति शुरू ही होती है द्वापर से। भक्ति का फल देने भगवान को आना पड़े। अब भगवान घर बैठे आए हैं भारत में। भारत इनका घर है ना! शिवरात्रि भी यहाँ मनाते हैं। मंदिर भी यहाँ बने हुए हैं। शिवबाबा तुमको बैठ नॉलेज देते हैं, जिसको ज्ञान अमृत अथवा सोमरस भी कहते हैं। तुमको गोल्डन एज्ड बनाए नॉलेज देते हैं तो नाम सोमनाथ पड़ता है। अभी तो भारत कितना कंगाल, इनसॉलवेंट है। तुमको इस समय तीन पैर पृथ्वी के भी नहीं मिलते। कहाँ बैठकर पढ़ते हो! यह है तो बड़ी ते बड़ी कॉलेज। हॉस्पिटल कम कॉलेज है। हॉस्पिटल से हेल्थ, कॉलेज से वेल्थ 21 जन्मों लिए मिलती है। कितनी बड़ी कॉलेज है! तुम मिडगेट हो। कहते हैं– बाबा, 12 मास हुआ है, आपका बच्चा बना हूँ। आत्मा बोलती है इस शरीर द्वारा– बाबा, मैं 6 मास का हूँ। मिडगेट हुआ ना! बोलता तो है ना, आपका बना हूँ। अच्छा, अब अच्छी रीति पढ़ो तो साथ ले जाऊँगा। यह सद्गुरु सच बोलते हैं। वो झूठे गुरु तो आधा में ही छोड़ मर जाते हैं। वो थोड़े ही सद्गति देते हैं। मैं तो साथ ले जाऊँगा। कलियुगी गुरु ऐसे कह न सके। वो खुद मर जाते हैं तो फिर पिछाड़ी में दूसरे को गद्दी पर बिठाते हैं। .....में पति भी एक किया जाता है। गुरु मर जाए तो फिर दूसरे को बनाते हैं। जैसे पुरुष की एक स्त्री गई तो दूसरी ले लेते हैं। इसको कहा जाता है– कलियुगी गुरु बोरे, सतगुरु तारे। बाकी तो सब हैं पतित बनाने वाले। सन्यासी लोग ऐसे नहीं कहते कि बाप को याद करो। वो तो कहते– शिवोहम्, तत् त्वम्। ऐसे अपन को ईश्वर कहलाने वाले हिरण्यकश्यप कहे जाते हैं। हम भी परमात्मा, तुम भी परमात्मा, सब सर्वव्यापी परमात्मा हैं। फिर स्त्रियों से ही अपनी पूजा कराते हैं। जिनको नर्क का द्वार कह भागे, फिर आकर स्त्री के गुरु बन बैठे हैं। और ही सबको डुबोते हैं। हिन्दू नारी के लिए कहते हैं, पति ही गुरु, ईश्वर, सब कुछ है। फिर सन्यासी क्यों गुरु बनते हैं? यह तो लॉ के विरुद्ध है। बाप कहते हैं, तुम अपनी स्त्री को डुहाग दिया है, विधवा बना दिया है। है तो यह भी ड्रामा; परन्तु बाप बैठ समझाते हैं इनको घर–बार छोड़, जंगल में जाना ही है। वास्तव में यह यज्ञ–तप–दान–पुण्य–तीर्थ आदि करने की सन्यासियों को दरकार नहीं है; परन्तु पैसे के लिए फिर अन्दर घुस पड़े हैं। आगे जंगलों में जाते थे, तत्व योगी थे, ब्रह्म अथवा तत्व को याद करते थे। बाप को छोड़ रहने के स्थान को

याद करते हैं। समझते, ब्रह्म भगवान है। बाप कहते हैं, यह उन्हों का मिथ्या भ्रम है। ब्रह्म तत्व, जिसमें हम अशरीरी आत्माएँ निवास करती हैं, उनको भगवान कैसे कहा जा सकता! या तो कहते, हम ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। आत्मा तो अविनाशी है, इनको पार्ट बजाते रहना है। बाप अच्छी रीत बैठ समझाते हैं, यह दादा भी भल शास्त्र आदि बहुत पढ़े हुए हैं; परन्तु मुझे नहीं जानते थे। अब इनको भी सुनाता हूँ। इनकी आत्मा सुनती है। मैं इनके बाजू में आकर बैठता हूँ, तुमको पढ़ाता हूँ। यह भी सुनता है। इनके मुख से ही पढ़ाता हूँ। तुमको देही–अभिमानी बनना है। दुनिया में कोई देही–अभिमानी होते नहीं। देही के बाप को ही नहीं जानते। तुम बच्चे जानते हो, बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा 5000 वर्ष पहले मुआफिक ले रहे हैं। सन्यासियों आदि को अपने वेद–शास्त्र ही बुद्धि में आवेंगे। यहाँ कोई शास्त्र की बात नहीं। बाप को क्या याद आवेगा, वो तो खुद मालिक है! तुम याद करते हो उस बेहद के बाप को। प्रजापिता ब्रह्मा के तुम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हो। डाडे से वर्सा लेते हो ब्रह्मा द्वारा। फादर है साकार, ग्रैंड फादर है निराकार। शिवबाबा की आत्मा इसमें है। दोनों की हैं। वो निराकार ग्रैंड फादर, यह साकार ग्रैंड फादर। यह फादर भी है तो मदर भी है; क्योंकि इनसे तुमको एडॉप्ट करते हैं। यह बड़ी समझने की बातें हैं। जो अच्छी रीति धारणा करेंगे वो ही विजयमाला का दाना बनेंगे। बाप समझाते हैं, मैं राजधानी स्थापन करता हूँ। इसमें त्रेता अंत तक 16108 प्रिंस–प्रिसेज़ होते हैं। वो दैवी राजस्थान था। अब तो आसुरी बन पड़े हैं, राजाएँ हैं नहीं। आगे तो भारत दैवी राजस्थान था, देवी–देवताओं का राज्य था, फिर द्वापर में विकारी राजस्थान हुआ। अभी का 21 जन्मों का वर्सा त्रेता अंत तक पूरा हो जाता है, फिर दान आदि से राजाई पद पाते हैं। पाप और पूण्य तो मनुष्य करते ही हैं। पूण्य करने से अच्छा जन्म लेते हैं। अभी तुम बहुत धर्मात्मा बनते हो। यह भारत पूण्य आत्माओं की दुनिया थी, अब है पाप आत्माओं की दुनिया। हार और जीत का यह खेल है। माया ते हारे हार है, माया पर जीते जीत है। उस्ताद है सर्वशक्तिवान। कहते हैं, माया भी कोई कम शक्तिवान नहीं है। आधा कल्प रावण का राज्य चलता है। यह कोई समझते थोड़े ही हैं।

बाप है स्वर्ग का रचयिता। आत्मा को अब बाप को ही याद करना है। आत्मा खुद कहती है, हम एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हैं। हमने 84 जन्म पूरे किए। अभी यह अन्तिम जन्म है, वापिस जाना है, फिर नए सिरे पार्ट बजाना है। यह पुराना चोला छोड़ हम जाते हैं बाप के पास, फिर पढ़ाई अनुसार आकर नया चोला लेंगे, श्याम से सुंदर बन जावेंगे। अच्छा, बापदादा, माँ का सिकीलधे बच्चों को नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार, गुडमॉर्निंग।